संदेश

सीपीआई (माओवादी)की 21वीं स्थापना वार्षिकोत्सवों को सितंबर 21 से 27 तक देशभर में क्रांतिकारी जोश के साथ मनाओ!

पार्टी, पीएलजीए, संयुक्त मोर्चा और क्रांतिकारी आंदोलन को बचायेंगे!

देशभर में प्रतिक्रांतिकारी ‘कगार’ युद्ध को विफल करने व्यापक जन समुदायों को वर्ग संघर्ष और गुरिल्ला युद्ध में संगठित करेंगे!

अपना पार्टी को दुश्मन के लिए अभेद्य बनायेंगे!

क्रांतिकारी आंदोलन की पीछेहट को पार करने के लिए अपना क्षमता को बढ़ायेंगे!

पार्टी कतारों को, पीएलजीए बलों को, क्रांतिकारी जन निर्माणों को, तमाम उत्पीड़ित जनता को सीपीआई (माओवादी) केन्द्रीय कमेटी का आह्वान!

केन्द्रीय कमेटी
सीपीआई (माओवादी)

सीपीआई (माओवादी)की 21वीं स्थापना वार्षिकोत्सवों को सितंबर 21 से 27 तक देशभर में क्रांतिकारी जोश के साथ मनाओ!

पार्टी, पीएलजीए, संयुक्त मोर्चा और क्रांतिकारी आंदोलन को बचायेंगे!

देशभर में प्रतिक्रांतिकारी 'कगार' युद्ध को विफल करने व्यापक जन समुदायों को वर्ग संघर्ष और गुरिल्ला युद्ध में संगठित करेंगे!

अपना पार्टी को दुश्मन के लिए अभेद्य बनायेंगे!

क्रांतिकारी आंदोलन की पीछेहट को पार करने के लिए अपना क्षमता को बढ़ायेंगे!

प्रिय कामरेडों व जनता!

पिछले साल अपन प्रतिक्रांतिकारी कगार युद्ध को प्रतिरोध करते हुए अपना पार्टी का 20 वॉ वार्षिकोत्सवों को उत्साह के साथ मनाये थे. उस वर्षगांठ के मौके पर तमाम पार्टी कतारों को, क्रांतिकारी आंदोलन को अपना केंद्रीयकमेटी द्वारा निर्देशित कर्तव्यों को लेकर पिछले एक साल से कगार युद्ध को विफल करने अपना पार्टी, पीएलजीए, स्थानीय क्रांतिकारी जन निर्माण बहुत हिम्मत के साथ, दृढ़संकल्प के साथ काम कर रही हैं. इस काम में शामिल तमाम पार्टी कतारों को, पीएलजीए बलों को, स्थानीय क्रांतिकारी जन निर्माणों को, हर क्षेत्र के नेतृत्वकारी कामरेडों को, क्रांतिकारी जनता को, क्रांति के हमदर्दों को अपना केंद्रीय कमेटी तहेदिल से क्रांतिकारी अभिनंदन पेश करती हैं.

पार्टी, पीएलजीए, संयुक्त मोर्चा और क्रांतिकारी आंदोलन को बचाने, देशभर में प्रतिक्रांतिकारी 'कगार' युद्ध को विफल करने व्यापक जन समुदायों को वर्गसंघर्ष और गुरिल्ला युद्ध में गोलबंद करने, दुश्मन के लिए अभेद्य पार्टी को मजबूत करने, क्रांतिकारी आंदोलन की पीछेहट को पार करने के लिए अपना क्षमता को बढ़ाने के लिए 21 वीं पार्टी वार्षिकोत्साव के मौके पर तमाम पार्टी कतोरों को, पीएलजीए बलों को, स्थानीय जन निर्माणों को, क्रांतिकारी जनता को अपना केंद्रीय कमेटी आह्वान करती है.

बीते एक साल में देश में नवजनवादी क्रांति को सफल बनाने की लक्ष्य को लेकर काम करते हुए कगार युद्ध को प्रतिरोध करते हुए अपना पार्टी का

महासचिव कामरेड बसवराजु (नंबाला केशवराव) केंद्रीय कमेटी सदस्य कामरेड्स चलपति, विवेक, उदय; राज्य कमेटी कामरेड्स शर्मा (जगजीत सिंह सोहल), गौतम, मधु (सज्जा वेंकटा नागेश्वर राव), जया, रूपेश, नीति, कार्तिक, चैते, गुड्डु, सत्यम, अलोक, पापन्ना, मधु (एगोलपु मल्लय्या), भास्कर, जगन, अरुणा, विजय शहीद हुए हैं. इसी अवधि में जिला कमेटी/कंपनी पार्टी कमेटी कामरेड्स 26 जन, एरिया कमेटी/प्लाटुन पार्टी कमेटी सदस्य कामरेड्स 86 जन, पार्टी सदस्य और पीएलजीए सदस्य 152 जन, स्थानीय जन निर्माण की कामरेड्स और जनता 38 जन शहीद हुए हैं. 43 कामरेडों का स्तर का विवरण नहीं मिला. कुल 366 जन कामरेड्स शहीद हुए. फिलिप्पीन्स कम्युनिस्ट पार्टी का केंद्रीय कमेटी सदस्य, नेशनल डेमाक्राटिक फ्रंट आफ फिलिप्पीन्स का नेता कामरेड लूई जलंदानी जून 7 के दिन 90 साल की उम्र में बीमारी के चलते अंतिम सांस ली, शहीद हुआ. बीते एक साल में दुनिया की समाजवादी क्रांति के तहत अलग–अलग देशों में कुछ क्रांतिकारी नेता, सदस्य शहीद हुए हैं. इन तमाम शहीदों को केंद्रीय कमेटी विनम्रतापूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करती है. उनके महानतम आशयों को अंतिम सांस तक जारी रकने की शपत लेती है.

प्यारे कामरेडों व जनता!

1972 में अपना पार्टी का तत्कालीन महासचिव कामरेड चारुमजुमदार को पुलीस पकडकर हत्या करने के 53 साल के बाद अपना पार्टी का महासचिव दुश्मन का हमला में शहीद होना पहली बार हुआ. नक्सलबाड़ी, श्रीकाकुलम संघर्षों की हार के बाद एकी साल में महासचिव सहित चार जन केंद्रीय कमेटी सदस्य, 17 जन राज्य कमेटी सदस्य कामरेड्स शहीद होना पहलीबार घटित हुआ. यह नुक्सान भारत की आंदोलन को सापेक्ष रूप से लंबा समय तक नकारात्मक रूप से प्रभावित करेगी. इस प्रभाव को पार करने के लिए कोशिश करना अपना कर्तव्य. कगार युद्ध का वजह से क्रांतिकारी आंदोलन तीव्र नुक्सान हाने की स्थिति के मुद्धे नजर क्रांतिकारी आंदोलन की भविष्य पर क्रांतिकारी खेमें में उठने वाले सवालों को जवाब देते हुए, डरा/सहमा हुआ लोगों को हिम्मत दिलाते हुए, उनमें आत्माविश्वास भरते हुए, दृढ़ संकल्प के साथ, अद्वितीय बहादुरी से तमाम क्रांतिकारी खेमें को आगे रहकर नेतृत्व प्रधान करना ही आज पार्टी का कर्तव्य. इस कर्तव्य के लिए, पार्टी को, क्रांतिकारी आंदोलन को घटित होने वाले नुक्सान की कारण को पता लगाना, उसे सुधारना जरूरी है, वस्तुगत स्थिति में (अब्जेक्टिव कंडिशन), आत्मगत परिस्थिति में (सब्जेक्टिव कंडिशन) क्रांतिकारी आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए मौजूद और पैदा होने वाले विषयों को समझकर, उस पर आधारित होकर पार्टी को, पीएलजीए को, संयुक्त मोर्चा को मजबूत करना चाहिए.

दुनिया की क्रांतिकारी आंदोलन की इतिहास में अनेक देशों में खासकर रूस और चीन की क्रांतिकारी आंदोलनों में अस्थाई पीछेहट का, हार का स्थिति उत्पन्न होने के बावजूद वह आंदोलनों ने उस स्थिति को पार कर जीत हासिल की. वहा की क्रांतिकारी पार्टीयों ने अपना–अपना देशों की तत्कालीन वस्तुगत और आत्मगत परिस्थितियों को मार्स्कवादी पद्धति के अनुसार सही विश्लेषण कर सही राजनीतिक, सैनिक दावपेंचों को तैयार करके हिम्मत के साथ क्रांतिकारी आंदोलनों को चलाने के वजह से वह जीत हासिल की. अपना पार्टी का इतिहास में भी नक्सलबाड़ी, श्रीकाकुलम आंदोलनों की हार के बाद, उस हार की कारणों को सही विश्लेषण करके सही राजनीतिक, सैनिक दावपेंचों को अपनाकर दृढ़ता और हिम्मत के साथ काम करके आंध्राप्रदेश, बिहार राज्यों में क्रांतिकारी आंदोलन का ज्वार को पैदा किये. नक्सलबाड़ी, श्रीकाकुलम आंदोलनों के बाद 1972 से लेकर अब तक बीते 53 सालों में केंद्र, राज्य सरकारे भारत की क्रांतिकारी आंदोलन को मिटाने के लिए कई सारे प्रतिक्रांतिकारी योजनाओं का तैयार करके क्रांतिकारी आंदोलन पर फासीवादी दमन अभियानों को चलाते हुए कुछ समयों में कुछ राज्यों में क्रांतिकारी आंदोलन को नुक्सान पहुंचाये. भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) का गठन के बाद 2005 से सल्वाजुडुम जैसी श्वेत मिलिशिया दमन अभियान, ग्रीनहंट, समाधान, सूरजकुंड़ योजना के तहत चलाई गई अभियानों को प्रतिरोध करते हुए, हराते हुए, विफल करते हुए आ रहें हैं. अपन सही राजनीतिक, सैनिक दावपेंचों को लेकर, हिम्मत के साथ वर्गसंघर्ष–जनयुद्ध को चलाने से ही यह काम कर पाये हैं. वर्तमान कगार युद्ध को विफल करने के लिए भी इसी क्रांतिकारी पद्धति को अपनायेंगे.

अपना पार्टी, पीएलजीए बल गुप्त काम–काज पद्धति को, गुरिल्ला युद्ध नियमों को, केंद्रीय कमेटी द्वारा तय किया गया दावपोंचों को सही तरीका से लागू नही करने के वजह से कगार युद्ध की शुरुआत से अपना पार्टी, पीएलजीए बल गंभीर नुक्सान हो रही हैं. अपना बल छोटे इलाका तक सीमित ना होकर, व्यापक इलाका में घूमना; केंद्रित होकर ना रहते हुए विकेंद्रित होकर रहना; कानूनी–गैरकानूनी, खुला–गुप्त संघर्ष, संगठन रूपों को समन्वय कर वर्गसंघर्ष चलाना; शहरी, मैदानी, जंगली इलाकों में मजदूर, किसान, मध्यम वर्ग, राष्ट्रीय पूंजीपतियों को क्रांतिकारी आंदोलन में लामबंद करना, इन दावपेंचों के अलावा और भी कुछ राजनीतिक, सैनिक दावपेंचों को अपना केंद्रीय कमेटी, पोलित ब्यूरो तय किये थे. इन दावपेंचों को सही तरीका से अमल ना करने की वजह से अपना बल भारी संख्या में नुक्सान हो रही है. सभी राज्य कमेटीयॉ, जिला कमेटीयॉ इन नुक्सानों को समीक्षा करके, गलतियों को सुधार करके केंद्रीय कमेटी द्वारा तय किया गया सही राजनीतिक, सैनक दावपेंचों को अपनाते हुए वर्गसंघर्ष और गुरिल्ला युद्ध को चलाकर नुक्सानों से बचेंगे.

केंद्रीय कमेटी, पोलित ब्यूरो द्वारा तय की गई दावपेंचों को लागू करते हुए अपना पार्टी को, पीएलजीए को, संयुक्त मोर्चा को, क्रांतिकारी आंदोलन को बचायेंगे. ऐसा करते हुए, 31 मार्च, 2026 के पहले क्रांतिकारी आंदोलन को निर्मूलन करने की केंद्र, राज्य सरकारों की दुष्ट योजना को विफल करेंगे.

केंद्र, राज्य सरकारों से चलाये जा रही कगार युद्ध के चलते अपना बल गंभीर नुक्सान होने के बावजूद अपना बलों की बहादुराना प्रतिरोध से दुश्मन की सशस्त्र बल भी काफी संख्या में नुक्सान हो रही हैं. लेकिन दुश्मन इसे नही बता रही है. अपना पक्ष का नुक्सानों को बढ़ा–चढ़ाकर बताना, उनका पक्ष का नुक्सानों के बारे में ना बताना या तो कम करके बताना मानसिक युद्ध है. क्रांतिकारी शिविर इस मानसिक युद्ध का प्रभाव से बचना चाहिए. कर्रेगुट्टा अभियान में दुश्मन की सशस्त्र बल 16 दिन तक आगे नही बढ़ पाई (अडवान्स नही हुआ), आखिरी में अपना तरफ से मूकाल बगोडा बनकर दुश्मन के सामने आत्मसमर्पण करके गद्धार बनकर दुश्मन का गाईड़ बनकर अपना बलों के ऊपर हमला करवाया. इससे अपना 22 कामरेड्स शहीद हुए. दुश्मन इस नुक्सान का बारे में एलान किया, लेकिन उनका नुक्सानों का बारे में नही बताया. इस आपरेशन के दरम्यान 110 जगहो पर बूबीट्राप्स विस्फोट होकर दुश्मन की सशस्त्र बलों की 45–50 जन मारे गये, 70–80 जन घायल हुए. उसी आपरेशन के दौरान मई 8 के दिन दुश्मन की सशस्त्र बल अपना बलों पर घेराबंदी हमला करने के बावजूद अपना बल हिम्मत के साथ प्रतिरोध किये. इस प्रतिरोध में अपना बल 5 जन ग्रेहाउण्ड्स कमांडों को मार गिराकर, 4 कमांडों को घायल कर, उनसे एक एके–47, एक एसएलआर बन्दूक, 150 कारतूस, पिट्ट वगैराह जप्त किये थे. इस तथ्य को चुपाकर सीआरपीएफ की क्रास फैरिंग में 3 ग्रेहाउण्ड्स वाले मारे जाने का बयान दिया गया. बीजापुर जिला का मुरदोंडा गांव के पास जुलाई 8 के दिन अपना पीएलजीए बल बहादुराना एम्बुश करके 11 पुलीसो को मार गिराया, 5 जन को घायल किया. दुश्मन इसे भी चुपाकर उनके तरफ सिर्फ 3 पुलीस वाले घायल होने का वक्तव्य दिया. इसी तरह झारखंड़, ओडिशा और कुछ राज्यों में अपना प्रतिरोध से दुश्मन को हो रही नुक्सानों के बारे में वह जानबूझकर नही बता रही है. यह दुश्मन का कमजोर बनोबल को दर्शता है. इसलिए दुश्मन, अपना एक पार्टी कार्यकर्ता/जन गुरिल्ला के पीछे 30 से 100 तक सशस्त्र बलों को तैनात कर हमला कर रहे हैं. केंद्र, राज्य सरकारे संघर्ष इलाकों में लाखों की संख्या में सशस्त्र बलों को तैनात करने पर भी, उसे आधुनिक हथियार से लैस करने पर भी, आधुनिक टेक्नॉलजी से लैस करने पर भी वह बल अपना बलों की बराबरी की संख्या में आकर अपने ऊपर हमला करने का हिम्मत नही कर पा रही है. क्योंकि दुश्मन का बल

किराया के बल है. यह दुश्मन की रणनीतिक कमजोरी है. यह कमजोरी आखिरी में कगार युद्ध हार जाने का स्थिति को उत्पन्न करती है.

कगार युद्ध के वजह से अपना मनोगत शक्तियॉ काफी संख्या में नुक्सान होने बावजूद कई राज्यों में अपना पार्टी, जनसंगठन मौजूद है. उसके नेतृत्व में अलग–अलग तरीका से हजारों जनता क्रांतिकारी आंदोलन में शामिल हो रही है. अभी भी कुछ राज्यों में गुरिल्ला दस्ता मौजूद है और वह अपना शक्ति के अनुरूप गुरिल्ला युद्ध चला रही है.

दुनिया की कई सारे देशों की वर्गसंघर्ष की अनुभव को संश्लेषण ही वैज्ञानिक समाजवाद सिद्धांत. क्रांतिकारी आंदोलन में अनुकूलता प्रधान रहने पर भी प्रतिकूलता रहते है, प्रतिकूलता प्रधान रहने पर भी अनुकूलता रहते है – ऐसा अपना सिद्धांत बताती है. और, दुश्मन को/लुटेरे वर्ग को रणनीतिक तौर पर, कार्यनीतिक तौर पर आंकलन लगाना करके, दुश्मन को/लुटेरे वर्ग को रणनीतिक तौर पर कागजी शेर के रूप में ही आंकलन लगाने का बात अपना सिद्धांत बताती है. इसलिए कार्यनीतिक तौर पर दुश्मन आज/वर्ततान में मजबूत स्थिति में होने पर भी वह रणनीतिक तौर पर कमजोर ही है. वस्तुगत परिस्थिति को, आत्मगत स्थिति को अपन द्वंद्वात्मक तरीका से विश्लेषण करना. इन स्थितियों का बारे में अपन एक तरफा, मनोगत आंकलन नही करना. इसलिए अपन, वस्तुगत परिस्थिति क्रांति के लिए अनुकूल बन रही है, आत्मगत स्थिति कमजोर है, क्रांतिकारी आंदोलन अस्थाई पीछेहट में है, दुश्मन वर्तमान में मजबूत स्थिति में है करके आंकलन कर रहे हैं. लेकिन इस परिस्थिति को अपन बदल सकते है, इस स्थिति को बदलना अपना जिम्मेदारी है. क्रांतिकारी आंदोलन अस्थाई पीछेहट पे रहने पर भी, हार जाने पर भी समाज में जब तक वर्ग मौजूद रहेगा तब तक वर्ग संघर्ष चलते रहेगी. उस वर्गसंघर्ष को सही दावपेंचों से चलाने से क्रांतिकारी पार्टी फिर से मजबूत होकर, क्रांतिकारी आंदोलन आगे बढ़ते है.

इसलिए, आज की परिस्थिति में सिर्फ दुश्मन की मजबूती को (अप्पर हेंड़), अपन नुक्सानों को देख कर अविश्वास पे नही जाना, हिम्मत नही खोना, निष्क्रियता पे नही जाना. दुश्मन वर्तमान में मजबूत रहने पर भी उन में मौजूद कई सारे कमजोरियों को देखना, देशभर में, संघर्ष की इलाकों में करोडों लोग अपना पार्टी की मदद मांगने की इच्छा/आकांक्ष की बात को, क्रांतिकारी आंदोलन में जनता की भागीदारी को, अपना पार्टी को, पीएलजीए को जनता देने वाले मदद को ध्यान में रखकर बरपूर विश्वास से, हिम्मत से, सक्रियता से, पहल कदमी से काम करना चाहिए. बदले हुए परिस्थिति के अनुरूप वर्गसंघर्ष और गुरिल्ला युद्ध को चलाना चाहिए.

बीते दिनों में क्रांतिकारी आंदोलन में अनुकूल स्थिति के चलते गुप्त काम–काज की पद्धति को अमल करने में कुछ गलतियॉ हुई. उस गलतियों को सुधार कर दुश्मन के लिए अपना पार्टी को अभेद्य बनाना और आत्मसमर्पण को भी नियंत्रण करना. बदले हुए सामाजिक स्थिति के अनुरूप, अस्थाई पीछेहट को पार करने लायक वर्गसंघर्ष और गुरिल्ला युद्ध को संचालन करने से ही पार्टी का शक्ति और क्षमता बढ़ती है. इसलिए, 'भारतदेश की उत्पत्ति प्रणाली में बदलाव–अपना राजनीतिक कार्यक्राम', 'जाति सवाल–हमारा दृष्टिकोण', 'राष्ट्रीयता सवाल–हमारा दृष्टिकोण' नामक दस्तावेजों के मार्गदर्शन पे साम्राज्यवाद विरोधी, दलाल नौकरशाही पूंजीवादी विरोधी, सामंतवादी विरोधी वर्गसंघर्ष को चलायेंगे. छोटे, विकेंद्रित कार्रवाईयों से गुरिल्ला युद्ध को चलायेंगे.

कगार युद्ध को रोककर केंद्र, राज्य सरकारे माओवादी पार्टी से शांती वार्ता शुरू करने की मांग को लेकर जनता देशभर में चला रही आंदोलन को मदद देंगे. जनता की फायदा के लिए हमारा पार्टी हमेशा वार्ता के लिए तैयार रहती है. इसे हम फिर एक बार एलान कर रहे है. इसलिए केंद्र, राज्य सरकारे कगार युद्ध को रोकने की, संघर्ष इलाकों में तैनात सशस्त्र बलों की केंपों की तैनाती को रोकने की मांग (डिमांड़) कर रहे हैं.

प्यारे कामरेडों व जनता!

अंतरराष्ट्रीय पैमाने पर इस बीच घटित/घटरही सभी परिणाम 2008 से चल रही साम्राज्यवाद की संकट का ही नतीजा है. लगभग बीते 12–13 सालों से मौजूद बहुध्रुवीय (मल्टीपोलार वरल्ड) दुनिया की अस्थिरता, अस्तव्यस्तता, रवलबली का अभिव्यक्ति ही है. अमेरिका अध्यक्ष डोनाल्ड ट्रंप दुनिया की देशों पर लगाने वाली आयात–शुल्को/सीमा–शुल्को से, प्रतिशोध करो से नुक्सान उठाने वाले पिछडे देशों ने इस बीच में चीन और रूस देशों से व्यापार समझौते कर रही हैं. इससे अमेरिका का आर्थिक संकट और भी बढ़ने के कारण से वहा की जनता ट्रंप का आर्थिक नीतीयों के विरोध में संघर्ष कर रहे हैं. चीन, एक तरफ अमेरिका से अस्थाई तौर पर सीमा–शुल्क कटौती का समझौता करके, दूसरी तरफ पिछडे देशों से (ग्लोबल साऊथ) व्यापार समझौता करते हुए रूस ने युक्रेन युद्ध को चला रही है.

दुनिया भर में वर्तमान में सेमिकंडक्टर्स (माईक्रोचिप्स), इलेक्ट्रिक वाहन (बिजली से चलने वाली वाहन), दुर्लभ खनिज पदार्थ (रेर अर्थ मिनरल्स), अंतरिक्ष की क्षेत्रों में साम्राज्यवाद देशों के बीच में तीखा होड चल रही है. इस होड का वजह से अमेरिका की नेतृत्व वाली नाटो गठजोड़ की देशों, रूस के बीच में युक्रेन में परोक्ष युद्ध चल रही है. इसी के तहत पश्चिम एशिया में इजराईल को सामने रख कर अमेरिका ने गाजा सहित तमाम फिलिस्तिन देश को कब्जा करने की युद्ध कर रही है/इजराईल से आक्रमणकारी युद्ध चला रही है. उपरोक्त

क्षेत्रों की होड के वजह से अमेरिका और चीन के बीच में तनातनी/वैर चल रही है. आर्थिक संकट से पार करने के लिए साम्राज्यवाद देशों ने अपना रही आर्थिक, राजनीतिक, सैनिक, तकनीकी नीतीयों के अंतर्गत/कारण, वह, पिछडे देशों पर आक्रामणकारी युद्धों को अंजाम दे रही हैं और फासीवाद को लागू कर रही है. इसके चलते पिछडे देशों की उत्पीडित राष्ट्रियताओं ओर जनता को साम्राज्यवाद से अंतर विरोध दिन ब दिन तेज हो रही है. इसी नीतीयों के चलते पूंजीवादी–साम्राज्यवादी देशों में पूंजीपति और मजदूर वर्ग के बीच में अंतर विरोध तेज हो रही है. इसलिए दुनिया भर में क्रांति के लिए अनुकूल महौल दिन ब दिन बढ़ रही है.

ब्राह्मणीय हिन्दुत्व फासीवादी आरएसएस–भाजपा की केंद्र, राज्य सरकारे 2047 तक देश को 'विकसित देश (विकसित भारत)' बनाने धोखेबाजी जोरदार प्रचार को जनता समझना जरूरी है. 'विकसित भारत' का मतलब 'कार्पोरेट हिन्दु देश' के सिवाय और कुछ नही. देश 'हिन्दुराष्ट्र' बनना के मतलब, देश का आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों में देशी, विदेशी कार्पोरेट कंपनियों का (साम्राज्यवाद, दलाल नौकरशाही पूंजीपतियों की) लूट और उत्पीडन और बढ़ने के साथ–साथ वह कानून का मान्यता प्राप्त कर लेती है. इन कार्पोरेट कंपनीयों के साथ सामंती वर्ग का गठजोड और मजबूत होकर इन तीनों को (साम्राज्यवाद, दलाल नौकरशाही पूंजीवाद, सामंतवाद) गठजोड देश की उत्पीडित जनता को, उत्पीडित समुदायों को (महिला, दलित, आदिवासी, धार्मिक अल्पसंख्यक लोग), उत्पीडित राष्ट्रीयताओं को अत्याधिक/तीव्र लूट और उत्पीडन करेगी. 'विकसित भारत' का मतलब साम्राज्यवादियों का, दलाल नौकरशाही पूंजीपतियों का, सामंती वर्ग का संपत्तियॉ बडे पैमाने पर बढ़ जाना, व्यापक जनता का विनाश हो जाना. इसलिए 'विकसित भारत' का पीछे चिपा हुआ धोका को समझकर उसका विरोध में संघर्ष करना आज देश की जनता की जिम्मेदारी है.

इस बीच में भारतदेश से अमेरिका के लिए निर्यात होने वाले सामान पर सीमा–शुल्क बढ़ने के वजह से प्रधानमंत्री मोदी और केंद्रीय मंत्री लोग 'आत्मा निर्भरता', देश में बने माल को ही खरीद ने का नारा– 'वोकल फर लोकल' को बढ़ावा दे रहे हैं. साम्राज्यवाद देशों के साथ किए गये असमान, अन्यायपूर्ण आर्थिक, व्यापार–वाणिज्य समझौतों को रद्ध किये बिना, साम्राज्यवाद का सामने सिर ना झुकाने वाले स्वतंत्र आर्थिक नीतीयों को अपनाये बिना 'आत्मा निर्भरता', 'वोकल फर लोकर' नारा देश की जनता को छलने के अलवा और कुछ नही. इससे देश की अर्थव्यवस्था में जनता को फायदा होने वाली कोई बदलाव नही होगी. अमेरिकि प्रतिशोध सीमा–शुल्क के प्रति प्रतिशोध सीमा–शुल्क लगाने से डरने वाले भारत सरकार/मोदी सरकार अमेरिका से आयात होने वाले शक्कर

पर सीमा–शुल्क को आगामी दिसंबर तक कम करने का एलान किया. इससे साम्राज्यवाद के प्रति भारत सरकार का आत्मासमर्पण, आज्ञाकारी नीतीयॉ स्पष्ट हो जाती है. ऐसे परिस्थिति में, भारत की बाजार (मार्केट) में प्रवेश करने वाले बहुराष्ट्रीय कंपनियों को रोक कर देश की किसानों को, दृग्ध (डेरी) उत्पादको को, मछुआरो को बचाने की नरेंद्रमोदी की बयान सिर्फ धोखा के अलावा और कुछ नही. एक तरफ रूस और चीन के साथ व्यापार समझौते करते हुए अमेरिका की गुस्सा से बचने के लिए, 'भारत और अमेरिका के बीच का संबंध विशेष दर्जा का है, वह रणनीतिक महत्व का है, इसलिए दोनों देशों की आपसी हितों को नुक्सान ना होने देंगे'– ऐसी बयान इस बीच में भारत की विदेशी मंत्रलय का तरफ आई. इससे साबित होता है की भारत अमेरिका का सामने स्वतंत्र नही है, आज्ञाकारी है, आत्मा निर्भर नही बल्की अमेरिका पर निर्भर है. इसलिए मोदी, भाजपा की धोखेबाजी प्रचार का असलीयता को समझकर साम्राज्यवादियों का, दलाल नौकरशाही पूंजीपतियों का, सामंती वर्ग का विरोध में चल रही वर्गसंघर्ष को व्यापक और तेज करना ही आज देश की जनता का जिम्मेदारी है.

नरेंद्रमोदी गुजरात की मुख्यमंत्री रहते समय से ही भाजपा विधानसभा और संसदीय चुनाओं में 'वोट चोरी' के साथ–साथ और भी कई सारे धांधलिया करते हुए चुनावों में जीत हासिल करते आ रही है. इसी षड़यंत्रकारी पद्धतियों को अपनाकर 2024 अप्रैल की संसदीय और विधानसभा चुनावों में जीत हासिल की, और बाद में घटित महाराष्ट्र विधानसभा के अलावा और भी कुछ राज्यों का चुनावों में जीत हासिल कर सत्ता पे कब्जा कर बैटी है. 'वोट चोरी' की धांधलियों को कांग्रेस पार्टी बहुत देरी के बाद जनता का सामने ला पाई. इससे संसदीय चुनाव प्रणाली की डोंग जनता का सामने फिर एकबार खुल गई. इसलिए सच्छे जनवाद नवजनवादी क्रांति की सफलता से ही संभव होगा. इसलिए माओवादी पार्टी के नेतृत्व में देश में चल रही नवजनवादी क्रांति में भाग लेने के लिए देश की व्यापक जनता से हम आह्वान कर रहे है. साम्राज्यवाद को, दलाल नौकरशाही पूंजीपति वर्ग को, सामंती वर्ग को सत्ता से हटाकर देश में लूट और उत्पीडन न रहने वाली नवजनवादी व्यवस्था को, समाजवाद को निर्माण करने के लिए चल रही नवजनवादी क्रांति में भाग लेने के लिए देश की व्यापक जनता से हम आह्वान कर रहे हैं.

नारे :

- ★ **अपना पार्टी को, क्रांतिकारी आंदोलन को निर्मूलन करने की दुष्ट योजना से केंद्र, राज्य सरकारे चला रही 'कागार' युद्ध को विफल करेंगे!**
- ★ **जन आधार को, मनोगत शक्तियों को बढ़ाते हुए पार्टी को, पीएलजीए को, जन निर्माणों को/संयुक्त मोर्चा को, क्रांतिकारी आंदोलन को**

बचाएंगे!

★ आत्मासमर्पण और गद्दारी को विरोध करेंगे! उत्पीडित जनता की फायदा के लिए दृढ़ता से लडेंगे!
★ दुश्मन के लिए पार्टी को अभेद्य बनाएंगे!
★ जन आधार पर निर्भर होकर शक्ति अनुसार गुरिल्ला युद्ध को चलायेंगे!
★ साम्राज्यवाद विरोधी, दलाल नौकरशाही पूंजीवाद विरोधी, सामंती विरोधी वर्गसंघर्ष को तेज करेंगे!
★ ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवाद का विरोध में संघर्ष करेंगे!
★ मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद जिंदाबाद!
★ भारत की नवजनवादी क्रांति जिंदाबाद!
★ जनमुक्ति छापामार सेना (पीएलजीए) जिंदाबाद!
★ भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) जिंदाबाद!

क्रांतिकारी अभिनंदन के साथ,
केन्द्रीय कमेटी,
भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

दिनांक : 6.9.2025.